

भगवान्परिपाति दीनान्वास्त्रेव (वाग्नेव ed. Bomb.) वत्सकम् *wie eine Kuh ihr Kalb* Bhāg. P. 4, 9, 17. धावतीभिश्च वासाभिर्वृधोभौः स्ववत्सकान् 10, 46, 9. गिरः RV. 8, 44, 25. Winde 7, 3. 7. 1, 37, 10. — 10, 99, 1. compar. Kāth. 33, 4. — Nach Viçva bei Uóváal. m. Tag; n. Haus, Wohnung; Kreuzweg; dieselben Bedeutungen bei Wilson und im ÇKDr. angeblich nach MED., wo aber die gedr. Ausg. वस्त्र hat; vgl. वास्त्र.

वाष्पुका f. N. pr. eines Dorfes Rāśa-Tar. 8, 1262. 1491.

1. वास् s. वाष्.

2. वास्, वासयति s. वासप्.

1. वास (von 3. वस्) m. Gewand, Kleid Comm. zu AK. 2, 6, 2, 17. कृष्णवासाय MBh. 13, 882. चीरवत्कलवासधक् HARIV. 12039. nur scheinbar KATHAS. 3, 71, wo वासस्पलक्तकम् zu schreiben ist. Eine aus metrischen Rücksichten für वासम् eintretende Nebenform. — Vgl. 2. उद्वास, कृत्ति, 2. गो, घन, 2. पट.

2. वास (von 5. वस्) m. n. SIDDH. K. 249, b, 7. zu belegen nur m. 1) das Haltmachen für die Nacht, Uebernachten; das Verweilen, Aufenthalt; Aufenthaltsort, Wohnung AK. 2, 2, 5, 3, 4, 14, 73. H. an. 2, 592. शिशुं मृत्तयायवो न वासे RV. 5, 43, 14. Kāth. Ça. 16, 6, 21. 25, 4, 3. 13, 23. Āçv. GRU. 1, 8, 7. Ça. 3, 14, 18. ÇĀKṢH. GRU. 2, 12. दिवसात् परिश्रान्ताः — विकारावस्येव वीरा वासमोचयन् MBh. 1, 5014. व्यपयतिषु वासाय सैन्येषु 7, 2478. न्यप्रोधमेव वासार्थं कल्पयामासतुः R. 2, 32, 100. वासमाज्ञापयत् 5, 74, 20. श्वर्धं जगाम सुकृतं वासाय 7, 54, 18. वासार्थमाहरोह मकृतम् KATHAS. 42, 42. अहं वासाय प्राविशं गृहम् 71, 264. विविशुः सर्वतः पार्थ वासायेवापउजा हुमम् MBh. 7, 5620. अमाच्छ्रान्तः कुरुते वासम् 11, 165. R. 1, 33, 20 (34, 18 GORR.). तस्यास्तौरे तदा सर्वं चक्रुर्वासपरिग्रहम् 36, 8. कृत्वा तु शैलपृष्ठे तौ वासमेकां निशाम् 3, 77, 4. 1, 63, 8. 7, 66, 16. 71, 3. चक्रुर्वासं नाघनि sie machten unterwegs nirgends Halt 108, 1. कोति वासं गिरिगह्वरेषु seinen Wohnsitz aufschlagen Spr. 2047. गर्भवासेषु कुर्वति वासम् MBh. 11, 166. तत्र वासं न कारयेत् Spr. 1670. वासं चाभ्यकल्पयत् R. 2, 54, 17. समन्तात्स्य शैलस्य सेना वासमकल्पयत् 98, 29. R. GORR. 1, 1, 45. अन्यत्र वासं परिकल्पयन् VARĀH. BRH. S. 39, 11. गङ्गापकण्ठे वासश्च विकृतिो कृत्तिनापुरे KATHAS. 18, 63. यदि तावदने वासश्चरितस्त्वया MBh. 4, 1934. तस्मिन्गृहे नित्यमुपैमि वासम् 13, 524. ऋषीणामाश्रमे वासमभ्ययात् R. 7, 66, 15. नन्दनवासमेत्य MBh. 3, 12348. अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित् Spr. (II) 106. इतो वासमर्जुन रोचय MBh. 4, 8. mit einem loc. componirt P. 6, 3, 18. ग्रामेवास und ग्रामं Schol. गृहस्थिके JĀĒ. 3, 297. गृहे MBh. 1, 1877. शरभङ्गाश्रमे R. 1, 3, 17. fg. वने 2, 52, 61. Spr. 337. 2183. 2730. काञ्चनपञ्जरे 2782. विदेशे 3373. वने Bhāg. P. 3, 2, 16. असकृद्भवासेषु वासः M. 12, 78. नरके Bhāg. 1, 44. Bhāg. P. 8, 21, 32. स्वर्गे R. 2, 27, 20. पादमूले Bhāg. P. 7, 1, 37. तत्पदे PAÑĀR. 1, 4, 15. गुरोः कुले M. 2, 243. गुरो 67. Kīm. NITIS. 2, 22. दासीषु MBh. 2, 2230. नारीणां चिरवासे बान्धवेषु 1, 2999. MĀRK. P. 77, 19. अरण्यं R. 2, 28, 23 (वासं वसतः). 44, 6. पुरं 93, 12. परगृहं UTTARAR. 20, 3 (27, 3). अन्यगृहं Spr. 1763. 3418. RAGH. 19, 2. स्वर्गं SUÇA. 1, 96, 4. स्वर्गवासकरं einen Aufenthalt im Himmel verschaffend HARIV. 282. गेलिकं PAÑĀR. 1, 4, 24. अन्धतामिषं KATHAS. 4, 63. वासं वस् sich niederlassen, sich aufhalten, wohnen, leben: अस्तमर्के गते वासं केशिन्यां तावद्येषुतुः R. 7, 51, 30. नाब्राह्मणे गुरौ शिष्यो वासमात्यत्तिकं वसेत् M. 2, 242. चतुर्दश वने वासं वर्षाणि वसतो

VI. Theil.

मम R. 2, 37, 5. अज्ञातवासं वसतो मङ्गले MBh. 3, 3020. अज्ञातवासं न्यवसन्नास्तस्य निवेशेन 2653. दुर्गवासं बहुधा निरूप्य ein schwerer Aufenthalt 12344. तस्मिन्गुरौ गुरुवासं निरूप्य 14, 749. उषिता मुखवासम् R. 1, 17, 17 (6 GORR.). वसन्बहुदुःखवासम् Bhāg. P. 3, 31, 20. अनाश्रमे das Leben ausserhalb der vier Āçrama JĀĒ. 3, 241. Am Ende eines adj. comp. seinen Aufenthalt habend, wohnend in: वसं HARIV. 4213. तत्तीरवासानि (वासानि ed. Bomb.) देवतानि R. 2, 52, 84. एकं am selben Orte lebend Spr. 836. गुरुं beim Lehrer MBh. 14, 917. मुखं frohe Tage verlebend R. 1, 17, 20 (9 GORR.). — न ज्ञाति मुक्तो वासम् Wohnstätte MBh. 13, 269. VOP. 23, 6. वासं विवेश Haus HARIV. 7679. दृश्यते ब्राह्मणानां च वासाः R. GORR. 1, 31, 4. KATHAS. 71, 82. DAÇAK. 74, 14. VET. in LA. (III) 8, 20. DHŪRTAS. 73, 10. PAÑĀT. 118, 23. Bhāg. P. 1, 16, 33. तौ तपसा वासो यशसा तेजसामपि । ऋषीः Stätte MBh. 12, 13346. कात्तविलासवासवसति DHŪRTAS. 73, 16. Vgl. सत्ते, उद्, कीर्ति, गर्भ (auch MBh. 11, 166. KATHAS. 29, 110), 1. गो, ग्राम, जल (im Wasser sich aufhaltend auch R. GORR. 2, 28, 26), तपो, नाग, पङ्क, 1. पट, बदरीवासा, विलवास, ब्रह्म, भूत, मर्कट, मृगमादवासा, यथावासम्, वन (adj. auch MBh. 14, 917), वारि, वेश, शयनीय, अम्बुवासी. — 2) Tageretse: स गत्वा गणितान्वासान्सताष्टौ R. 7, 71, 3. — 3) Lage, Verhältniss: नैवविधेषु वासेषु भयमस्ति HARIV. 9933. — 4) = वासना Vorstellung, falscher Schein: भुङ्गभोगवासेन श्रोणिमूत्रेण MBh. 4, 190.

3. वास m. Wohlgeruch VIKR. 38. MĀLATIM. 148, 4. — Vgl. 3. पट, भङ्गवासा, मुखवास (auch Çiç. 9, 52), वक्त, सु und वासप्.

वासःकुटी Zelt ÇABDĀRTHAK. bei Wilson.

वासःपल्पूलौ m. VS. Prāt. 3, 37. Kleiderwäscher VS. 30, 12.

1. वासक = 1. वास am Ende eines adj. comp.: अशुद्धं schmutzige Kleider tragend (in einem verrufenen Hause wohnend St.) JĀĒ. 2, 266. सर्वं vollständig gekleidet (= सर्वस्याच्छादक NĪLAK.) im Gegens. zu दिग्वासम् MBh. 13, 753. संवीतासितं KATHAS. 73, 283. पट (so die ed. Bomb.) m. N. pr. eines Schlangendämons MBh. 1, 2159.

2. वासक (von 2. वास) 1) n. Schlafgemach KATHAS. 3, 31. 13, 21. 17, 131. 18, 281. 22, 14. 24, 166. 30, 113. 115. 33, 13. 43, 317. 46, 249. 48, 138. 49, 117. 71, 50. 87. 157. 73, 187. 337. 120, 47. am Ende eines adj. comp. f. आ 17, 66. — 2) m. pl. N. pr. eines Volkes MĀRK. P. 37, 46; vgl. वन.

3. वासक (von 3. वास) 1) m. a) Wohlgeruch: मुखं = मुखवास PAÑĀR. 3, 9, 4. — b) Gendarussa vulgaris Nees., ein hübscher Strauch in Gärten, AK. 2, 4, 2, 22. AUSH. 6. SUÇA. 2, 69, 15. 208, 13. 222, 18. ÇĀRĜ. SĀM. 2, 1, 7. 2, 32. 59. 23 SUÇA. 2, 303, 4. — 2) f. वासका f. dass. ĠAṬĀDH. im ÇKDr. वासिका f. dass. AK. 2, 4, 2, 21. ÇABDAR. im ÇKDr. VARĀH. BRH. S. 33, 22.

4. वासक m. = गानाङ्गविशेष ÇKDr. mit folgendem Beloge aus SĀRĠĀDĀM.: मनोहरो ऽथ कन्दर्पश्चाह्वनन्दन एव च । चवरो (!) वासकाः प्रोक्ताः शंकरेण स्वयं पुरा ॥ केषांचिन्मते नामान्यपि पृथक् । विनोदा वरदश्चैव नन्दः कुमुद एव च । चवरो वासकाः प्रोक्ता गीतवाद्यविशारदः ॥

वासकाणी f. Opferhalle (पञ्चशाला) ÇABDAR. im ÇKDr.

वासकसज्ञा adj. f. im Schlafgemach bereit, Bez. einer Geliebten, die zum Empfang des Geliebten Alles in Bereitschaft gesetzt hat, DAÇAR. 2, 23. SIB. D. 112. 120. GĪR. 6, 8.